प्रारम्भिक पूर्ण
Prarambhik Final
गायन (VOCAL)
ख्याल एवं ध्रुपद

पूर्णांक : १०० शास्त्र- २५, क्रियात्मक-७५

शास्त्र (Theory) मौखिक

(१) परिभाषा– स्थाई, अन्तरा, संचारी, आभोग, वादी, सम्वादी, ताल, मात्रा, तथा थाट।

(२) भारतीय संगीत की दो मुख्य पद्धतियों का ज्ञान।

(३) पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों का सामान्य परिचय जानना आवश्यक है।

(४) भातखंडे स्वर लिपि पद्धति का ज्ञान।

क्रियात्मक (Practical)

(१) पाठ्यक्रम के अन्तर्गत राग समूह में आरोह के साथ पांच अलंकारों का अभ्यास।

(२) पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों के आरोह,अवरोह को ठाह, दुगुन तथा चौगुन लय में गानें का अभ्यास।

(३) निम्नलिखित राग समूह में दो स्वर मालिका, एक लक्षण गीत तथा दो छोटे ख्याल जानना आवश्यक है।

ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों को ख्याल के बदले दो ध्रुपद विलम्बित लय तथा दुगुन लय में गानें का अभ्यास आवश्यक है-

निर्धारित राग- काफी, खमाज और भैरव।

(४) निम्नलिखित तालों के बोलों को ताली, खाली सहित बोलने की क्षमता।

ख्याल गायन के लिए- दादरा, कहरवा, त्रिताल।

ध्रुपद गायन के लिए-कहरवा, चौताल और सूलताल।

टिप्पणी - पूर्व वर्ष का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

प्राचीन कला केन्द्र, चंडीगढ़
प्रारम्भिक पूर्ण (शास्त्र)

स्थाई - *किसी भी सांगीतिक रचना का प्रथम भाग जिसकी रचना अधिकांशतः मन्द्र से मध्य सप्तक के बीच होती है, वह स्थाई कहलाती है।*

अन्तरा - *किसी भी सांगीतिक रचना का दूसरा भाग जिसकी रचना अधिकांशतः मध्य से तार सप्तक के बीच होती है, वह अन्तरा कहलाता है।*

संचारी - *किसी सांगीतिक रचना का वह भाग जिसका प्रारम्भ सा, म या प स्वर से हो, वो संचारी कहलाता है।*

आभोग - *किसी सांगीतिक रचना का वह भाग जो अन्तरे के समान हो और जो रचना के समापन का संकेत दे वह आभोग कहलाता है। प्राचीन काल और मध्य काल में प्रायः इन चारों भागों में रचना की जाती थी, परन्तु कालान्तर में केवल स्थाई एवं अन्तरे का ही प्रयोग किया जाता है।*

वादी स्वर - *यह स्वर राग में राजा का स्थान रखता है, अर्थात राग में वह स्वर जो सबसे अधिक प्रयोग हो, जो बार बार प्रयोग में लाया जाय तथा जिस पर बल दिया जाय, वादी स्वर कहलाता है। उदाहरण -* ***राग कल्याण*** *का वादी स्वर –* ***ग*** *।*

सम्वादी स्वर - *वह स्वर जो राग में वादी स्वर से कम और अन्य स्वरों से अधिक प्रयोग हो, वह सम्वादी स्वर कहलाता है। उदाहरण -* ***राग काफी*** *का सम्वादी स्वर –* ***प*** *।*

अनुवादी स्वर - *वादी और सम्वादी के अलावा जो स्वर शेष रहते हैं, वे अनुवादी स्वर कहलाते हैं, अर्थात वादी सम्वादी का अनुसरण करने वाले स्वर अनुवादी कहलाते हैं।*

विवादी स्वर - *जो स्वर राग में कभी-कभी ही प्रयोग हो तथा जो राग के सौंदर्य में वृद्धि करें, उन्हें विवादी स्वर कहते हैं। उदाहरण -* ***राग बागेश्री*** *में* ***प*** *का प्रयोग कभी-कभी किया जाता है।*

वर्जित स्वर - *जो स्वर राग में कभी प्रयोग न किये जाये, वर्जित स्वर कहलाते हैं। उदाहरण -* ***राग भूपाली*** *में* ***म*** *और* ***नि*** *स्वर का बिलकुल भी प्रयोग नहीं किया जाता।*

ताल - *गीत के मापने के प्रमाण को ताल कहते हैं। जिस प्रकार कपड़ा गज या मीटर में, सामान टन या किलोग्राम में नापा जाता है, उसी प्रकार गीत के माप अर्थात समय मापन का पैमाना ही ताल है।*

मात्रा - *एक सी लय के कई समान भागों को मात्रा कह सकते हैं। जैसे - घड़ी की टक-टक के मध्य जो समय लगता है वह एक मात्रा के बराबर होता है।*

थाट - *वह स्वर समुदाय जिनसे रागों की उत्पत्ति होती है वह थाट कहलाते हैं। सात स्वरों का वह समूह जिसमें शुद्ध या विकृत स्वर क्रमानुसार आते हों वह थाट कहलाता है। उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत में 10 थाटों का वर्णन मिलता है, जिनके नाम इस प्रकार हैं -*

बिलावल
कल्याण
खमाज
काफी
भैरव
आसावरी
भैरवी
मारवा
पूर्वी
तोड़ी

संगीत पद्धति - *लिखने, पढ़ने और संचय करने की व्यवस्था को पद्धति कहते हैं। संगीत की दो प्रमुख पद्धतियां हैं।*

उत्तर भारतीय संगीत पद्धति *- यह पद्धति उत्तर भारत में प्रचलित है, इसके अविष्कारक* ***पं विष्णु नारायण भातखण्डे*** *जी थे।*

दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति - *यह पद्धति दक्षिण भारत में अधिक प्रचलित है, इसके अविष्कारक* ***पं विष्णु दिगम्बर पलुस्कर*** *जी थे।*